ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

वैश्विक चुनौतियां एवं गांधीदर्शन

Global Challenges and Gandhian Philosophy

Paper Submission: 10/10/2020, Date of Acceptance: 26/10/2020, Date of Publication: 27/10/2020

हेमेन्द्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
विभागाध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान,
रा.स्व.ग्रा.उ.पी.जी. कालेज
पुखराया, कानपुर देहात, भारत

सारांश

''वर्तमान विश्व तमाम चुनौतियों का सामना कर रहा है राष्ट्रों के मध्य युद्ध हिंसा और नाभिकीय हथियारों से जनित भय का माहौल है। भू–मण्डलीयकरण के नाम पर बाजार एवं अर्थव्यवस्थाओं पर कब्जा करने की होड़ है। विकास के लिये प्राकृतिक संसाधनों की लूट से असमानता और पर्यावरण की क्षति हो रही है। उपभोक्तावादी जीवन शैली में अपसंस्कृति और मूल्यों का क्षरण जारी है।

मानवीय संकट के इस दौर में गांधी दर्शन एक वैकल्पिक मार्ग है। सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम की भावना पर आधारित गांधी दर्शन मानव को केन्द्र में रखकर, उसके भौतिक कल्याण के साथ–साथ आध्यात्मिक उन्नयन की कल्पना करता है। केन्द्रीयकरण के स्थान पर विकेन्द्रीकरण, संघर्ष के स्थान पर सहयोग, हिंसा की जगह अहिंसा तथा प्रकृति से निकटता का जो संदेश गांधी देते हैं, वे बेहद उपयोगी हैं। सत्य,नैतिकता,संयम, अपरिग्रह,त्याग की जीवन शैली व्यक्ति सहित संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए आदर्श है।

Contemporary world is facing many challenges, war among nations. Scenario of violence and fear created by nuclear weapons." Competition to capture markets and economies in the name of globalization. Looting of natural resources for development is leading to inequality and environmental degradation. Consumerist life styles continue to degrade and erode values in society.

Gandhian philosophy is an alternative way of life in this era of humanitarian crisis. Gandhian philosophy, based on the spirit of survey Bhavantu Sukhinah and Vasudhaiva Kutumbakam, envisions a human being, with his physical welfare as well as spiritual elevation. Instead of centralization, he recommends decentralization, cooperation in place of conflict, non-violence in place of violence and the message Gandhi gives about proximity to nature are very useful. The life style of truth, morality, restraint, non possession, renunciation is ideal for the welfare of the entire humanity including the individual.

मुख्य शब्द : क्रोनी कैपिटेलिज्म, वालस्ट्रीट आन्दोलन, जैसमीन क्रान्ति, समावेशी विकास, वहनीय विकास, उत्तर आधुनिकता, पोस्टट्रुथ।
Crony Capitalism, Occupy Wallstreet, Jasmine Revolution, Inclusive Development, Sustainable Development, Post-Modernism, Post-Truth.

प्रस्तावना

यूरोप से विकसित हुआ आधुनिक संप्रभुराज्य, उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद से अपनी यात्रा तय करते हुए सभी तरह के आधुनिक प्राधिकार के रूप में केन्द्रीकृत हो गया है।

21वीं सदी के भूमण्डलीकरण के इस दौर में भी राष्ट्रो के बीच मतभेद आमतौर पर बल प्रयोग के माध्यम से ही हल किये जा रहे हैं। सहअस्तित्व के अन्तर्राष्ट्रीय कानून कमजोर राष्ट्रों और नागरिको को न्यूनतम सुरक्षा ही प्रदान करते हैं।

आज राष्ट्रों के मध्य हथियारों की दौड़, संकीर्ण राष्ट्रीयता का उभार, संरक्षणवाद, आतंकवाद और शरणार्थियों की समस्या व्याप्त है। लोकतंत्र एवं मानवाधिकारो के हनन से मानवता के लिए चुनौतियां पेश हो रही हैं।

वर्तमान पूंजीवादी विकास माडल से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हाथों में पूंजी का केन्द्रण बढ़ा है और क्रोनी कैपिटेलिज्म से राष्ट्रराज्य को चुनौतियां पेश हो रही हैं। आय और आमदनी की असमानता देशों के बीच तथा देश के भीतर बढ़ी है।

प्राकृतिक संसाधनो के अंधाधुंध दोहन के चलते परिस्थितिकीय संकट उत्पन्न हो गया है वहीं पश्चिमी उपभोक्ता जीवनशैली ने अपसंस्कृति को बढावा दिया है। समाज में हिसां, धर्मान्धता तथा नस्लीय कट्टरता बढ़ी है ऐसे में प्रश्न उठता है कि यह वर्तमान सभ्यता की आधुनिकता है या अदूरदर्शिता।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान विश्व में जारी संकट एव विसंगतियों पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान हेतु वैकल्पिक मॉडल पर विमर्श करना है। महात्मा गांधी के विचार एवं दर्शन पर दृष्टिपात करके हम यह जानने की कोशिश कर सकते हैं कि इन वैश्विक चुनौतियों और जीवन की कठोर वास्तविकताओं के समाधान के लिए गांधी दर्शन, किस प्रकार एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

शीतयुद्ध के पश्चात एक नया वैश्विक परिदृश्य उभरकर सामने आया है सोवियत विघटन के बाद अमेरिका अकेली महाशक्ति के रूप में उभरा और इसे पूंजीवाद के विजय के उद्घोष के रूप में प्रस्तुत किया गया, आज रूस चीन जैसे देश भी पूंजीवादी प्रणाली की ओर पूरी तरह मुड़ चुके हैं, वहीं बाद के वर्षो में विश्व बहुध्रुवीयता की ओर बढ़ा है, कई देश नाभिकीय हथियारों के केन्द्र बन गये हैं। मध्य एवं छोटे स्तर की शक्तियों के रूप में आतंकवादी गुट तथा गैरराज्य कार्यकर्ता (Non state actors) इन हथियारों को प्राप्त कर विश्व सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं।

आज भी दुनियां के कई भागों में प्राकृतिक संसाधनो की लूट को लेकर कब्जों की लड़ाई जारी है जिसके चलते वहां के कई देश युद्ध एवं हिंसा के शिकार हैं, चाहे वे पश्चिमी एशिया, मध्यपूर्व, सीरिया, टर्की, ईरान, इराक हो या अफगानिस्तान। इन देशो में अराजकता, गृहयुद्ध और अशांति है जिसके चलते व्यवस्था के खिलाफ आतंकवादी गुट सक्रिय हैं, और मानवाधिकारों का हनन जारी है। विश्व के विभिन्न देशों में हिंसा के कारण फैलती अस्थिरता से न सिर्फ जानमाल को नुकसान हुआ है बल्कि शरणार्थियों की गम्भीर समस्या ने भी जन्म लिया है। सीरिया, मध्यपूर्व आदि देशों में इस्लामिक स्टेट से सताये लोग बड़ी संख्या में यूरोप पलायन कर रहे हैं, सीमायें सील की जा रहीं हैं दक्षिण एशिया में भी यह मानवीय संकट के रूप मे है।

पश्चिमी विकास का आदर्श राष्ट्र अमेरिका है जिसका सबसे अधिक मुनाफा देने वाला उद्योग है, शस्त्रनिर्माण। सबसे अधिक टेक्नोलॉजी का विकास, हथियारों के निर्माण में हुआ है और हथियार मुनाफे का व्यापार बनेगा तो उसके खपत और उसके उपयोग की रणनीति भी बनानी पड़ेगी। दुनियां में ये हिंसा को जन्म दे रहा है चाहे वह आतंकवाद के रूप में हो या एक देश का दूसरे देश से टकराव के रूप में।[1]

अलबर्ल्ट आइन्सटीन ने लिखा था ''20वीं शताब्दी ने विश्व को दो सामर्थ्यवान बातें दीं हैं एक अणुबम और दूसरा महात्मांगाधी। अणुबम विध्वंस का प्रलय का सर्वनाश का प्रतीक है तो गांधी निर्माण क्षमता विधायकता एवं शान्ति का''[2]

डगलस मकार्थर जो मित्रराष्ट्रों की सेनाओं के सर्वोच्च सेना नायक थें वे युद्धक हथियारों की उपयोगिता के विशेषज्ञ भी थे, ने गांधी के इन विचारों को अन्तिम बताया था कि विवादों का बल प्रयोग द्वारा सुलझाया जाना न केवल गलत है वरन उसमें मानव जाति के लिए आत्मघाती तत्व निहित हैं

गांधी ने उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद तथा अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध एवं प्रतिद्वन्दिता का कारण, केन्द्रीकृत औद्योगिक व्यवस्था को ही माना था। इसके पीछे पूंजीवाद गतिशील शक्ति थी यही पाश्चात्य भौतिक सभ्यता की अधिकांश बुराइयों की जड़ तथा विश्व में हिंसा का कारण थी। अपनी 'पुस्तक हिन्द स्वराज' मे उन्होने इसे शैतानी सभ्यता तक कहा था।[3] पूंजीवादी प्रणाली में राज्य के हाथ में शक्ति के संकेन्द्रण को गांधी ने 100 वर्ष पूर्व ही महसूस कर लिया था। आज की राजसत्ता का चरित्र अधिक क्रूर दमनकारी और जन विरोधी है वह पूंजी, वर्चस्ववादी कारपोरेटी शक्तियों के गठजोड़ से चल रहा है

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और सभ्यता के सम्बन्ध में गांधीवादी विचारक राज किशोर लिखते हैं– '' पूंजीवाद समाज की मुख्य शक्ति जनता, का शोषण करती है पूंजीवाद एक प्रकार की प्रत्यक्ष हिंसा है। पाश्चात्य सभ्यता में प्रेम अहिंसा के लिए कोई केन्द्रीय स्थान नहीं है इस लिए जनता हिंसक हो जाती है बढ़ती असमानताओं और लालच के कारण पूर्वी समाजों में इसी प्रकार की हिंसक सभ्यता पनप रही है। गांधीवादी तरीके से अहिंसक संस्कृति की स्थापना की जा सकती है।[4]

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भेदभाव तथा अंग्रेजीराज के दमन व हिंसा का विरोध करने के लिए अहिंसक क्रांति की शुरूआत की थी। यद्यपि गांधी ने ''शान्ति निर्माण'' जैसे शब्द का प्रयोग नहीं किया है मगर फिर भी उन्हें इसका अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने शांति निर्माण के लिए व्यक्ति केन्द्रित दृष्टिकोण का विकास किया है। क्योंकि मानव स्वभाव से अच्छा है, इसलिए मानव जाति के अन्दर अहिंसात्मक ढंग से संघर्ष का निपटारा करने की पूरी संभाव्यता है। आज दुनिया में आतंकवादी हिंसा के पीछे के कारणों मे कहीं न कहीं एक वर्ग द्वारा यह महसूस किया जाना भी है कि उनके साथ अन्याय हो रहा है भले ही यह अहसास गलत कारणों से पैदा हुआ हो दिमाग बदलने की कोशिश हिंसा की रणनीति से अच्छी है गांधी का सत्याग्रह, अहिंसक साधनों द्वारा प्रभावकारी शांति निर्माण का यंत्र है। वे दक्षिण अफ्रीका में नफरत के बिना दमन के विरोध, के प्रतीक बन गये। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होने इसका प्रयोग किया। गांधी को इस बात का श्रेय है कि उन्होने अहिंसा के सिद्धान्त का सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में विस्तार किया, उनके लिए अहिंसा इतनी महत्वपूर्ण थी कि उन्होने इसे स्वराज से पहले रखा था।[5]

सोलिडेरिटी मूवमेण्ट के नेता और पोलैण्ड के पूर्व राष्ट्रपति लेक वलेसा ने सत्याग्रह आंदोलन के 100वर्ष पूरे होने पर अपनी नई दिल्ली यात्रा के दौरान कहा ''जब हम हिंसा के साथ लड़ते हैं तो हम असफल हो जाते है परन्तु जब हम अहिंसा (गांधीवादी तरीका) को अपनाते हुए लड़ते हैं, हम सफल हो जाते है।[6]

विगत वर्षों में यूरोप, आस्ट्रेलिया में विदेशी नागरिकों पर नस्लीय हिंसा हुई जर्मनी में उग्र दक्षिणपंथी हमले तथा नव नात्सीवादी प्रवृत्तियों के पुनः उभरने की शिकायतें सामने आई। वहीं देखाजाय तो, गांधी

ऐसी शक्तियों के हमेशा विरूद्ध थे, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान गांधी ने ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध, तत्कालीन स्थितियों का लाभ उठाने के बजाय, मित्रराष्ट्रों का समर्थन, फासीवादी,नाजीवादी शक्तियों के विरोध में किया था क्योंकि गांधी उन्हे मानवता व विश्व के लिए ज्यादा बड़ा खतरा मान रहे थे।

इतिहास गवाह है कि यूरोप में राष्ट्रवाद के नाम पर कई राज्यों ने अपने विस्तार के लिए दूसरे राष्ट्रों पर युद्ध थोपे हिंसा व अत्याचार किये । वर्तमान में एक ओर दुनिया में वैश्वीकरण की बात की जा रही है दूसरी ओर, देशो मे क्षेत्रीयता,संरक्षणवाद तथा राष्ट्रवादी कट्टरता देखने मे आई है। वहीं राष्ट्रवाद के विषय में गांधी ने कहा था ''राष्ट्रवाद बुराई नही है। यह तो संकीर्णता, स्वार्थ तथा पृथक्करणीयता, आधुनिकराष्ट्रों का विषय है, जो बुराई है।[7] गांधी को वह राष्ट्रवाद स्वीकार्य नहीं था जो विश्व के विभिन्न देशों के बीच दीवारें खड़ी करता हो। गांधी का राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं, मनुष्य को अपने राष्ट्र से आगे जाकर सम्पूर्ण मानवजाति से प्रेम करना चाहिए यही उनकी अन्तर्राष्ट्रीयता है।

विश्व में राज्य एवं समाज के बीच शक्ति संतुलन बिगड़ता जा रहा है। समाज व्यवस्था की जगह पूंजीवादी राज्य का विस्तार हो रहा है। गांधी राज्य की तुलना समाज को महत्व देते हैं। वे वास्तव में समाज एवं व्यक्तियों के बीच पूर्ण एकीकरण के पक्षधर थे, इसमें व्यक्ति तथा समाज के सघंर्ष को हल करने में मदद मिलती है वे राज्य की सत्ता के केन्द्रीकरण के विरूद्ध विकेन्द्रीकरण के पक्ष में हैं।

गांधी का चिन्तन मानव अधिकारों व मानवता पर केन्द्रित है। 1960 के दशक में मार्टिनलूथर किंग जूनियर ने अमेरिका में नागरिक अधिकारों के आंदोलन में गांधी से प्रेरणा ली। उन्होने कहा था अगर मानवता को आगे बढना है तो गांधी ही रास्ता हैं। इसी तरह 1990 के दशक में नेल्सन मंडेला ने अपने नये दक्षिण अफ्रीका में श्वेत,अश्वेत सभी को बराबर अधिकार देने की घोषणा की । यहां भी गांधी की भावना काम कर रही थी। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 2010 में भारत यात्रा के दौरान कहा कि यदि महात्मा गांधी न होते और अमेरिकी लोगों ने उनके संदेश से प्रेरणा न ग्रहण की होती तो मै आज आपके सामने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में न खड़ा होता।

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों को मुक्त कराने के लिए जो संघर्ष किया था उनकी यह प्रेरणा अन्य देशों में रहने वाले भारतीय मजदूरों के साथ भी जुड़ी थी। अहिंसक आंदोलन गांधी की अनुपम देन है, यह आम जन के अधिकारों के लिए आज भी प्रभावी औजार है। भारत में जे0पी0 आन्दोलन हो या कुछ वर्ष पूर्व''अरबस्प्रिंग'' या जैसमीन आंदोलन हों वहां सत्ता के विरूद्ध बदलाव का गांधीवादी तरीका इस्तेमाल हुआ है। समकालीन सन्दर्भ में जब वैश्विक आतंकवाद से लड़ने की जरूरत पर सहमति है और राज्य स्वयं को अधिक शक्तियों से लैस कर रहे हैं तब नागरिक जनवादी अधिकार आन्दोलन की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है।

गांधी ने अपनी पुस्तक हिंदस्वराज में संसदीय प्रजातंत्र की आलोचना करते हुए संसद की तुलना बांझ महिला से कर डाली है। उनकी नजर में यह व्यवस्था असमंजस व अनिश्चय से पीड़ित रही थी। आज के प्रतिनिधि लोकतंत्र की बुराइयों को देखते हुए वे कहीं न कहीं सही थे। लेकिन गांधी अपने विचारो को लेकर रूढिवादी नही थे। समय को देखकर उन्होने 1934 में कांग्रेस को, भारत में इसे बनाये रखने की स्वीकृति दे दी थी। आज का लोक कल्याणकारी राज्य,समाज को अपना गुलाम बनाये रखने के लिए जन कल्याणकारी कार्यो को अपने दायित्व घोषित करता है पर सत्ता मे बैठे जन प्रतिनिधि उन्ही लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन करते हैं जिसके लिए वे सत्ता में आये हैं। गांधी कहते हैं कि लोकतंत्र की जगह लोकस्वराज की ओर बढ़ना जरूरी है । लोक स्वराज, लोक व तंत्र के बीच बढ़ती दूरी को कम करेगा। मेधापाटकर कहती हैं कि आम सहमति को लोग भूल गये हैं विमर्श को भी भूलने लगे हैं शासन में संवाद के महत्व को गांधी जी ने बताया था।

उदारवादी पूंजीवादी देशों द्वारा प्रस्तुत वैश्वीकरण की संकल्पना में, देशों के मध्य परस्पर सहयोग के लिए पूंजीगत वस्तुओं, सेवाओं, तकनीक, सूचनाओं यहां तक कि संस्कृति के मुक्त प्रवाह पर जोर दिया गया। इसके पीछे एक उद्देश्य यह भी निहित था कि पश्चिमी विकसित देश अपनी अर्थव्यवस्था को भविष्य के संकट से बचा सकें। यह एक प्रकार का नव उपनिवेशवाद है जो अपने उत्तरचरण में क्रोनीपूंजीवाद के रूप में प्रकट हुआ। इसने समृद्धि को जन्म देने के साथ ही आय सम्पत्ति की विषमताएं, ऊर्जा संकट, गरीबी तथा बेरोजगारी भी दी है, समूचे अफ्रीकी महाद्वीप एवं एशिया के कई देश वैश्वीकरण की प्रक्रिया में, हासिये पर पहुंच गये हैं।[8]

पूंजीवाद के स्वर्णयुग (1945–1973) के दौर में पश्चिमी यूरोप के देशों मे विशाल स्तर पर उत्पादन और उपभोग से समृद्धि आयी थी और कल्याणकारी राज्यबने थे, भले ही समाजवादी देशो के चुनौतियों के दबाव में ऐसा हुआ। आज का पूंजीवाद लोगों से उनके अच्छे काम, वेतनों को छीनता है तथा धरती पर हवा पानी जैसे साझे साधनों को विशाल माल में तब्दील कर मुनाफे के लिए बेच देता है।[9]

लेकिन पूंजीवाद में निहित अन्तर्विरोधों के चलते अमेरिका और यूरोप में 2008 में जो आर्थिक मंदी आयी उससे दुनियां का कोई भी विकसित अर्थव्यवस्था वाला देश अछूता नही बचा और 1990 के दशक से चली वैश्वीकरण की व्यवस्था के सबसे उत्साही सर्मथकों का भी जोश ठंडा हो गया। अमेरिका में 2011 में आर्थिक प्रणाली के खिलाफ न्यूयार्क से वालस्ट्रीट आंदोलन चला जिसने यूरोप सहित वैश्विक अर्थव्यवस्था के खिलाफ लोगों के गुस्से को प्रकट किया। अर्थशास्त्र का नोबेल पानेवाले अर्थशास्त्री पॉलक्रुगमैन के अनुसार अमेरिका में 1920 के दशक में जो असमानता थी वह अब काफी अधिक हो गयी है।

आज इस पूंजीवादी प्रणाली को 'बेलआउट' पैकेज की जरूरत पड़ रही है। ब्रिटेन का ब्रेक्जिट ग्लोबलाइजेशन पर प्रश्न चिह्न लगाता है कई देश संरक्षणवादी नीतियां अपना रहे हैं 'अमेरिका फर्स्ट' इसी प्रकार की घोषणा है।

गांधी दर्शन के अनुसार पूंजीवादी प्रणाली का दोष यह है कि इसमें पूंजी का संचय व संकेन्द्रण बढ़ता जाता है, राज्य की शक्ति व विशिष्ट वर्ग की शक्ति बढ़ती है। संसाधनों पर एकाधिकार के कारण, संसाधनों के उत्पादन वितरण में असमानता पैदा होती है। असंतुलित शक्ति सम्बन्धों के चलते तथा एक वर्ग के, संसााधनों तक पहुंच की कमी के चलते, समाज में ऐसे संरचनात्मक तत्व देखे जा सकते हैं जिनसे हिंसा होती है भले ही यह प्रत्यक्ष दिखाई न दे। पूंजीवाद ने ऐसे ही संरचनात्मक समाज को जन्म दिया है ।[10]

गांधी ने इस पूंजीवादी प्रणाली की दो आधारों पर आलोंचना की है, यह न तो नैतिकता और न धर्म का ध्यान रखती है।[11] समाज में पाश्चात्य सभ्यता अलगाव और श्रम के शोषण के रूप में हिंसा को बढ़ावा देती है।

हिंद स्वराज में उन्होने पूंजीप्रधान तकनीक के स्थान पर श्रम प्रधान तकनीक का समर्थन किया है। उत्पादन को विकेन्द्रित किया जायेगा। पूंजी भी बंटेगी, जिसे समाज आपस मे बांटकर, अपनी आवश्कतानुसार प्रयोग करेगा। स्वदेशी व स्वराज से युक्त गांधीवादी आर्थिक दर्शन, समृद्धि, सामाजिक न्याय तथा संतुलित विकास पर आधारित है।

जॉन रस्किन, जिनकी पुस्तक ''अन्टु दिस लास्ट'' से गांधी प्रभावित थे, ने पाश्चात्य राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचना की है '' मशीन की ओर झुकाव मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता और अधिक साधन तलाशे जाते हैं, जो व्यक्ति को मशीन का नौकर नहीं बल्कि स्वामी बनाए।[12]

आरोप लगाया जाता है कि गांधी पश्चिमी वैज्ञानिक विकास और आधुनिक मशीनों के विरोधी थे पर उन्हे जो बात अस्वीकार्य थी वह मशीनों का होना नहीं बल्कि मनुष्य का मशीन संस्कृति की दासता स्वीकार करना था। वह टेक्नोलॉजी जो लोगों को बेरोजगार बनाती हो गांधी की स्वीकार्य नहीं थी। 1921 मे यंग इण्डिया में अपने एक लेख '' क्या चरखा मशीनीकरण के खिलाफ है?'' में गांधी ने लिखा ''मै किसी भी उच्चस्तरीय मशीन के पक्ष में हूँ जिससे भारत की गरीबी मिटाई जा सके'' चरखे की पूरी आधारभूत धारणा के पीछे एक मात्र तथ्य है कि भारत की करोड़ो करोड़ जनता अर्द्ध बेरोजगारी में थी, ऐसे में चरखे का विकल्प नहीं था।[13]

आज के युग में मनुष्यों को मशीनों से प्रतिस्थापित किया जा रहा है। रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स जैसी तकनीकी, श्रम व रोजगार छीन रही है।

आज दुनियां के अर्थशास्त्री जिस मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर को रोजगार सृजन व ग्रोथ का मंत्र बता रहे हैं, गांधी ने इसका पूर्व संकेत दे दिया था।

भूमण्डलीकरण और मुक्त व्यापार की आलोचना गांधी ने उसी समय की थी जब उन्होने यंग इण्डिया में लिखा था 'वर्तमान अव्यवस्था का कारण शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा दुर्बल राष्ट्रों का शोषण नहीं है बल्कि सक्षम राष्ट्रों द्वारा एक दूसरे का शोषण है।[14] वर्तमान में ये विसंगतियां, स्वयं विकसित राष्ट्रों, अमेरिका चीन के बीच व्यापार युद्ध के रूप में देखी जा सकती हैं।

मेधा पाटकर लिखती हैं 'ऐसा लगता है मल्टीनेशनलिज्म और आज के ग्लोबलाइजेशन जैसे संकट का अंदाजा उन्हें पहले से ही था इसी वजह से उन्होने स्थानीयता से शुरूआत कर पूरी आर्थिक प्रणाली, उसकी व्यवस्था और उसके विकास को तफसील के साथ सामने रखा था ''जिसका श्रम उसको दाम'' यह बुनियादी आर्थिक विचार था[15] दूसरे का धन किसी तरह हम लेलें इसे अपनी कमाई नहीं कहा जा सकता कमाई का अर्थ है प्रत्यक्ष उत्पादन।

देखा जाए तो टेक्नोलाजी के तेजी से बदलाव के कारण समाज भी अल्पकालिक सोच वाला हो गया है गांधीवादी विचार दीर्घकालिक समाज कल्याण की कल्पना लेकर चलता है। वे गांवो को साधन सम्पन्न बनाकर इनका आधुनिकीकरण करना चाहते थे। पर टिकाऊ विकेन्द्रित विकास के मॉडल द्वारा।

गांधीवादी नंदकिशोर आचार्य लिखते हैं '' अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में अधिकांश लोग गांधी जी को पिछड़ा चिंतक मानते हैं लेकिन उनका यह कथित पिछड़ापन दरसअल उत्पादन के प्रयोजन, प्रक्रिया और प्रचलित अवधारणाओं के खिलाफ एक प्रकार का विद्रोह ही था।[16]

गांधी के विचार में कमाई के लिहाज से समाज के सबसे अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति को ध्यान में रखकर नीति बनाई जाए। यही गांधी का अन्त्योदय है, अन्त्योदय का अर्थ है समाज के अन्तिम व्यक्ति का उदय। वे अन्त्योदय से सर्वोदय का लक्ष्य रखते थे सर्वोदय यानि सभी का उदय।

गांधी के विकास का मॉडल समावेशी है, जिसे आज के अर्थशास्त्री एक पूर्ण विकास का मॉडल बता रहे हैं। समावेशी लोकतंत्र की अवधारणा के प्रतिपादक के रूप में लंदन के राजनीतिक अर्थशास्त्री प्रो0 टाकीज फोटो पुलुस ने इसका उद्देश्य, हर स्तर पर नये समाज का पुनर्निर्माण बताया है। लोग स्वयं अपना निर्धारण करें यानि राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक स्तर पर अपने कल्याण का नियमन और नियंत्रण करें।[17] यद्यपि गांधी ने समावेशी लोकतंत्र व विकास की परिभाषा नहीं की है। गांधी के हिन्द स्वराज में यह परिकल्पना पहले ही की जा चुकी थी जो फोटो पुलुस ने दी है।

गांधी के लिए अर्थशास्त्र एवं नैतिकता में गहरा रिश्ता है। अपरिग्रह एवं अस्तेय यानि लोभ न करना, चोरी न करना, न तो पृथ्वी से न आने वाली पीढ़ियों से। उनका ट्रस्टीशिप का विचार, नैतिक अनिवार्यता के तौर पर पुनर्वितरित न्याय का ख्याल है। आज बिलगेट्स या अजीमप्रेम जी जैसे लोग या उनके फाउन्डेशन, सम्पत्ति को, जरूरत मंदो की सेवा में प्रदान कर रहे हैं।

औद्योगिक क्रान्ति की शुरूआत 18वीं शताब्दी में ब्रिटेन से हुई, मैनचेस्टर इसका अगुवा हुआ करता था जहां सबसे पहले औद्योगिक गतिविधियां शुरू हुई वहां

इसके दुष्परिणाम भी सबसे पहले आने शुरू हुए। तब से विकास की यात्रा में आज स्थितियां यहां तक पहुंच गयी हैं कि पर्यावरण और विकास के बीच युद्ध चल रहा है। वर्तमान विकासवादी दृष्टिकोण पर्यावरण की घोर उपेक्षा कर रहा है आज पर्यावरण और विकास की चाहत रखने वालों ने एक दूसरें को परस्पर विरोधी मान लिया है। आज की भोगवादी संस्कृति हमें प्रलय की ओर धकेल रही है। हम विज्ञान व विकास का दंभ भरते रहे और इससे विसंगतियां सामने आयीं। इससे उभरी चुनौतियों को बाजारवाद ग्लोबलवाद ने और उलझा दिया है।

पर्यावरण संकट के रूप में आज कार्बन उत्सर्जन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से जनित ग्लोबलवार्मिंग से एक तरफ जहां ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र के स्तर में वृद्धि हो रही है वहीं दूसरी ओर भू–जल स्तर में तेजी से कमी के चलते पेयजल संकट खड़ा हो गया है। पूरा मानसून चक्र बदल गया है।

WHO का मत है कि जलवायु परिवर्तन का असर न केवल सेहत बल्कि प्रमुख खाद्य उत्पादों, फलों पर पड़ रहा है। ऋतु चक्र परिवर्तन से बीमारियों के वायरस, कीटाणु वायुमण्डल में पनप रहे हैं करोड़ो लोग इसके चपेट में हैं। इसी तरह विकास के प्रतीक बडे बांध, विध्वंसकारी एवं विस्थापनवादी हैं। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा जलवायु परिवर्तन के कारण, जैवविविधता खतरे में है। बुनियादी इंसानी जरूरतें जैसे हवा,पानी, भोजन, वस्तु और दवायें जैवविविधता के उत्पाद हैं। प्रजातियां विलुप्त हो रही है। बढ़ती आबादी के लिए अधिक उत्पादन तथा इसके लिए प्रयुक्त रसायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग हमारे खाने मे जहर घोल रहे हैं।

वैज्ञानिक बहुत वर्षो से आगाह कर रहे थे, कि पृथ्वी ग्रह के समक्ष संकट उभर रहे हैं जो विकराल रूप लेंगे पर विकसित देशो में इससे निपटने के लिए रणनीति के स्तर पर सहमति नहीं बन पायी। अमेरिका और यूरोपीय देशों की हठधर्मिता इसके लिए जिम्मेदार रही है।

वर्ष 1996 में यूनेस्को के तत्वावधान में आयोजित सम्मेलन में विश्व के समक्ष उपस्थित समस्याओं पर गहन विचार विमर्श के दौरान यह बात उभरी कि मुख्य रूप से हर देश प्रगति और विकास की सही अवधारणा से जूझ रहा है। हर देश आर्थिक के साथ–2 किसी न किसी प्रकार के नैतिक संकट से भी जूझ रहा है।

असली सभ्यता का अर्थ है जीवन की शुद्धि और उससे जुड़ी समृद्धि। सभ्यता और सभ्य होने का सिर्फ एक अर्थ है, अपने आसपास के पर्यावरण का आदर और आदर सूचक मूल्य से उनके प्रतिसोच। इसे पर्यावरणीय नैतिकता भी कहते हैं। सभ्यताओं का पतन तभी होता है जब हमारे आसपास के पर्यावरण के प्रति सम्मान कम होता है इसे पर्यावरणीय नैतिकता भी कहते हैं। पर्यावरणीय नैतिकता गांधी दर्शन में सबसे बेहतर रूप में प्रकट हुई है। गांधी के समय पर्यावरण का बड़ा संकट नहीं आया था लेकिन गांधी जी ने यह चेतावनी दे दी थी कि अगर बडे–2 उद्योग लगेंगें, शहरीकरण बढेगा, झुग्गी बस्तियां फैलेंगी तो पर्यावरण की समस्या होगी जो मानव सभ्यता के लिए मुसीबत बनेगी। ब्रिटेन के तरह की प्रगति से भारत को बचाने के विषय में पूछने पर गांधीने कहा था अगर इसी नक्शे कदम पर भारत चलता है तो पृथ्वी जैसे कई अन्य ग्रहों की जरूरत पड़ेगी। स्पष्ट है कि ब्रिटेन के माध्यम से शताब्दी पहले ही आने वाले संकट के विषय में उन्होने हमें चेताया था।

नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र में, संसाधनो के अत्यधिक दोहन की समस्या से बचने का परामर्श गांधी ने दिया था, उनके अनुसार '' सबकी जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त साधन हैं लेकिन सबके लालच को पूरा करने के लिए नही''[18] गांधी के अपरिग्रह के मूल्य को भुलाकर,प्राकृतिक संसाधनो पर सभी के समान अधिकार के सिद्धान्त से आंख मूंदने पर केवल विनाश हासिल होगा।

गांधी का पर्यावरणीय चिंतन सर्वेश्वर बृद्धिवाद पर आधारित है। जो अहिंसा नैतिकता एवं ब्रह्माण्ड केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ–साथ वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान बताता है।[19]

गांधीवादी विचारधारा के प्रथम सूत्र के रूप में आधुनिक जीवनशैली के विरोध का सिद्धान्त प्रमुख है पर्यावरणक्षरण की समस्या को उपभोक्तावाद और भौतिकवाद के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है जिसमें प्राकृतिक संसाधनो का अनावश्यक क्षय अवश्यंभावी है। गांधी वादियों ने ग्रामीण समाज की ओर लौटने के विचार द्वारा पर्यावरण सुरक्षा का एक बेहतरीन तरीखा सुझाया था।[20]

गांधी ने हिन्द स्वराज में पश्चिमी लोभवादी संस्कृति की घोर आलोचना की है जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है और जहरीले अवशिष्ट पैदा होते हैं। अपने पर्यावरणीय नीति शास्त्र में उन्होने शहरीकरण और औद्योगीकरण की जगह सादगीपूर्ण कुटीर उद्योग आधारित ग्राम्यजीवन शैली को सर्वश्रेष्ठ बताया है।

विश्व में गांवो कीं संख्या में कमी आ रही है संयुक्तराष्ट्र के आर्थिक सामाजिक विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार 1995 में दुनिया में गांवों की आबादी तीन अरब से ऊपर थी और शहरों की लगभग दो अरब थी लेकिन 2015 में आते–आते इसमें अप्रत्याशित बदलाव आया। शहरों की आबादी चार अरब के आस–पास पहुंच गयी जबकि गांवों की लगभग तीन अरब ही रही। प्रति व्यक्ति खेती योग्य जमीन घट रहीं है आधुनिक खेती ने उत्पादन बढ़ाकर खाद्य सुरक्षा के संकट को कम जरूर किया है लेकिन इसने भोजन की गुणवत्ता को प्रभावित भी किया है।

तेल के मामले में अमीर वेनेजुएला जैसे देश में खाद्य युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो गयी है जीवन से जुड़े उत्पादों के संरक्षण के प्रति गम्भीर होने के लिए गांवों पर ध्यान देना होगा। इन्ही मुद्दों को लेकर 2016 में अमेरिका में गांवों से सन्दर्भित सम्मेलन हुआ जिसमें यह बात उभरकर सामने आयी कि अगर नये सिरे से गांवों पर ध्यान नहीं दिया गया तो गांवों का पता ही नहीं रहेगा शहरों पर भी दबाव बढ़ेगा।[21] गांधी के ग्राम केन्द्रित चिन्तन की प्रासंगिकता यहां देखी जा सकती है

पर्यावरणविद इस बात पर बल देतें है कि प्राकृतिक संसाधनों का सतत प्रबन्धन आवश्यक है ताकि भावी पीढ़ियों को वह सुरक्षित रूप से उपलब्ध हो सके

इसे सतत विकास कहा गया देखा जाये तो सस्टेनेबल डेवलेपमेण्ट या वहनीय विकास क्या है? यह विकास की अवधारणा के साथ, प्रकृति तथा भावी पीढ़ियों के प्रति गांधीवादी नैतिक दायित्वों को मिलाने से ही तो बना है। इस नैतिक दायित्व का भाव लोगों, समाजों और सरकारों द्वारा निर्वहन हुए बिना, वहनीय विकास का विचार सफल नहीं हो सकता।

विश्वभर में सभी स्थानों पर बहुत से लोग और संगठन पर्यावरणीय न्याय पाने के लिए गांधीवाद को अपना रहे हैं कुछ उल्लेखनीय उदाहरण, श्रीलंका के सर्वोदय आंदोलन के प्रणेता डॉ0ए0टी0 आरियारत्ने, थाईलैण्ड स्पिरिट इन एजूकेशन मूवमेण्ट के सुलाक सिवरक्षा, अमेरिका के फोरम ऑन रिलीजन एंड इकोलॉजी की संस्थापक मेरी एवलीन टकर, क्लाइमेन्ट कैम्पेन सस्थापक विली पैरिश आदि है।[22] अरनी नेस ने गहन परिस्थितिकी शब्द का चलन किया है उन्होने अपने कार्य पर गांधी के प्रभाव का वर्णन किया है।

हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि गांधी के जमाने में जो समस्यायें थीं उससे कई गुना समस्यायें आज हमारे सामने हैं। 1993 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तियों ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को एक आवेदन दिया जिसमें कहा गया कि वर्तमान समस्याओं के समाधान गांधी विचार में हैं।[23]

आज धार्मिक कट्टरता व फसाद दुनियां के अधिकांश देशो मे व्याप्त है वहीं गांधी कहते हैं मेरा धर्म हिन्दुत्व फिरका बाराना नहीं है इसमें इस्लाम, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म और जरूथ्रुष्ट धर्म की उत्कृष्टतायें शामिल हैं सत्य मेरा धर्म है और अहिंसा उसकी प्राप्ति का साधन। तलवार के सिद्धान्त को मैने सदा के लिए ठुकरा दिया है।[24]

धर्म एवं पंथिक विविधताओं को जितना गांधी ने समझा उतना शायद किसी ने नही। वे कहते थे भारत इसलिए एक राष्ट्र कहलाने से वंचित नहीं हो सकता क्योकि यहां विभिन्न धर्मो के लोग रहते हैं। उन्होने यह भी कहा था कि मेरी लालसा है कि यदि आवश्यकता हो तो मै अपने रक्त से हिन्दू एव मुसलमान के बीच सम्बन्धों को दृढ़ कर संकू।[25]

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जो अपनी पराजय और नैतिक शिथिलता को जानता है यह एक ऐसा युग है जिसमें प्राचीन मूल्य टूट रहें हैं असहिष्णुता और कडुवाहट दिनों दिन बढ़ रही है। वैश्विक बहुसंस्कृतिवाद के इस युग में जहां पश्चिमी विद्वान हटिंगटन ने अपनी पुस्तक ''clash of civilization" में संस्कृतियों के टकराहट की सम्भावना व्यक्त कर कहा था कि 'भविष्य के युद्ध, देशों के बीच नहीं संस्कृतियों के बीच लड़े जायेंगें' उन्होने मुख्यतया इस्लाम और इसाईयत के बीच टकराहट को ध्यान में रखकर ये बात कही थी। वहीं गांधी गहरे अर्थ में बहुसांस्कृतिकता या संस्कृतियों के साथ रचनात्मक संवाद के समन्वय को बढ़ावा देने की बात करते हैं। भूमण्डलीकरण के दौर में पाश्चात्य देशों की अपसंस्कृति का प्रभाव पूर्वी देशो पर भी पड रहा है। गांधी संस्कृतियों के मेलजोल के विरोधी नहीं थे मगर उस समय भी उन्होने इसे संयमित रूप में इसके केवल अच्छे तत्वों को ग्रहण करने की सलाह दी थी उन्होने कहा था ''मै नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से दीवारों से घिरा हो और खिडकियां बंद रहें। मैं चाहता हूँ कि संस्कृति की हवायें मेरे घर में यथा संभव खुलकर बहें लेकिन मै यह भी नही चाहता कि हवा के किसी झोके से मेरे पैर ही उखड़ जायें''[26]

उपभोक्तावादी जीवन शैली तथा उत्तर आधुनिकता के इस युग में परम्परागत स्थापित आदर्शों , विचारों का कोई मूल्य नहीं रह गया है जिसमें नैतिकता की तलाश की जा सके। आज पोस्ट ट्रुथ या ''उत्तर सत्य'' ने दस्तक दे दी है, सत्य को असत्य से प्रतिस्थापित किया जा रहा है। आधुनिक शहर तथा उपभोक्तावादी जीवन शैली के विषय में हिन्द स्वराज में गांधी ने लिखा था कि आज के नगर, महानगर हमारी मानसिक शारीरिक आत्मिक विकृति के नमूने हैं।

शहरीकरण की ओर अंधीदौड़ लालची संस्कृति को बढ़ावा देती है और यह लालच शहरीकरण को और अधिक बढ़ावा देता है। नैतिक सांस्कृतिक गिरावट की समस्या यहीं से शुरू होती है। अपनी पुस्तक 'द एफ्लुएण्ट सोसायटी'' में जे0के0 गालब्रेथ ने सभ्यता की गांधीवादी विचारधारा में अपने विचार को आगे बढाया है। गांधी की भांति ही उन्होने भी उच्चजीवन स्तर के और शहरीकरण के प्रति सनक को ठुकराया है।[27]

आज विकसित देशों में नारीवाद की अवधारणा, मूवमेन्ट या विमर्श के रूप में तथा विकासशीलदेशों में यह महिला सशक्तीकरण के लिए चर्चा मे है। लेकिन वहीं बाजार ने नारी को वस्तु भी बना दिया है। गांधी ने महिलाओं की शिक्षा तथा लैंगिक समानता को उसी जमाने में महत्वपूर्ण माना था। स्वयं उन्हे सार्वजनिक जीवन में प्रवेश भी दिलाया। आज रोजगार के लिए जिस कौशल एवं प्रशिक्षण की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है उसे गांधी ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में प्रमुखता से स्थान दिया है।

दुनियां आज स्वास्थ्य संकट से धिरी हुई है गांधी के प्राकृतिक चिकित्सा, आहारशास्त्र पर विचार अनुपम हैं उन्होने स्वयं पर उपवास, शाकाहार, साबुत अनाज व कच्चे भोजन का प्रयोग कर उसकी महत्ता को उसी समय स्थापित कर दिया था जिसे आज का आधुनिक समाज अपनाने की सोच रहा है। स्वच्छता को अभी तक अधूरे नजरिये से देखा जा रहा था उन्होने इसे जनांदोलन बना दिया था।

निष्कर्ष

दुनियां में बढ़ती हिंसा, अशान्ति हो या वर्तमान दोषपूर्ण पूंजीवादी विकास मॉडल, राष्ट्रवाद हो या लोकतंत्र, समाज में आदर्श नैतिकता सामाजिक समरसता धर्म की स्थिति हो या पर्यावरण, स्वास्थ्य जैसे विषय गांधी के विचार युगान्तरकारी हैं। आज दुनियां, आबोहवा से लेकर सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक और आर्थिक मोर्चों पर जिन मुश्किलों के मुकाबिल है, उनके हल की तलाश का विमर्श जब भी शुरू होता है तो गांधी पहले से भी कहीं ज्यादा उम्मीद बनकर उभरते हैं।[28] अर्नाल्ड

टायनबी जैसे दार्शनिक एवं नवज्ञान के सर्जक ने गांधी के ही रास्ते को मानवता को बचाने का विकल्प माना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *रामचंद्र राही, अमर उजाला 2 अक्टूबर 2018*
2. *सर्वोदय जगत अंक 5 16–31 अक्टूबर 2016 पेज 9*
3. *गांधी, एम0के0 'हिंद स्वराज' नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1939 पेज 33*
4. *शुक्रवार' साप्ताहिक पत्रिका 29 जनवरी–4 फरवरी 2011 पेज 10*
5. *गांधीः हिन्द स्वराज पेज 39*
6. *' द हिन्दू' 29 जनवरी 2007*
7. *गांधी : यंग इण्डिया, पेज 1292*
8. *वर्ल्ड फोकस (हिन्दी) जून 2012, पेज 77*
9. *प्रफुल्ल बिदवई लेख : राष्ट्रीय सहारा हस्तक्षेप 29 अक्टूबर 2011*
10. *गुडहेन्ड, जे एन्ड डी लेवर 2000ः सोशल कैपिटल एंड पोलिटिकल इकोनोमी ऑफ वायलेंस : ए केस स्टडी ऑफ श्रीलंका डिजेस्टर्स खण्ड 24, संख्या 4, पेज 390–407*
11. *एम0के0गांधीः 'हिंद स्वराज' नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 1939 पृष्ठ 35*
12. *चौधरी रणजीत : सम रिफ्लैक्शन्स ऑन हिंद स्वराज गांधी भाग 20 जुलाई– सितम्बर 1998 पेज 191*
13. *सुधींन्द्र कुलकर्णी, कादम्बिनी अक्टूबर 2018 पेज 24*
14. *प्रभु आर0 के एण्ड़ यू आर राव : महात्मा गांधी के विचार नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद 2007 पेज 239*
15. *'कादम्बिनी' अक्टूबर 2018 पेज 24*
16. *वही, पृष्ठ 44*
17. *योजना अगस्त 2013, पेज 33*
18. *प्यारेलाल : महात्मागांधी द लास्ट फेज भाग–2 नवजीवन पब्लिशिंग हाउस 1956 पेज 552*
19. *भारती पवन कुमार विज्ञान प्रगति जून 2012*
20. *अभय प्रसाद सिंह (सम्पादक) समकालीन भारत में विकास प्रक्रिया और सामाजिक आन्दोलन ओरिण्ट ब्लैक स्वान 2015 नई दिल्ली पेज 295*
21. *दृष्टिकोण मंथन, नई दिल्ली 16–31 सितम्बर अंक 2016*
22. *वर्ल्ड फोकस जून 2012, पेज 49*
23. *सर्वोदय जगत अंक 5 16–31 अक्टूबर 2016 पेज 9*
24. *हरिजन, 30 अप्रैल 1938 पेज 99*
25. *यंग इण्डिया 25.09.1924*
26. *गांधी वांग्मप, 20:159*
27. *वर्ल्ड फोकस जून 2012*
28. *संपादकीय कादम्बिनी अक्टूबर 2018 पेज 9*